चौधरी PHOTOSTAT

"I don't love studying. I hate studying. I like learning. Learning is beautiful."

"An investment in knowledge pays the best interest."

Hi, My Name is

इतिहास

UGC NET

वैदिक कालीन धर्म तथा गुप्त कालीन धर्म के स्वरूप का तुलनात्मक अध्ययन कीजिए।

समसामयिक के प्रश्न =>

वैदिक धर्म के सम्यक बोध के विभिन्न उपागमो का मुल्यांकन कीजिए।

~~वैदिक धर्म के~~ गुप्त काल में सामान्य जन द्वारा स्वर्ण सिक्को के इस्तेमाल का एक विवरण प्रस्तुत कीजिए।

पूर्व मध्यकालीन समाज के लिए भारतीय सामंतवाद शब्द की अनुपयोग्यता।

PHOTOSTAT
Jia Sarai New Delhi-16
Mob. 9818909565

उत्तर =>

Introduction with Theshis

सामंतवाद एक यूरोपीय अवधारणा है। किन्तु गैर यूरोपीय समाज के अध्ययन में भी इस अवधारणा का उपयोग हुआ है। भारतीय समाज भी इसका अपवाद नही है कुछ विद्वान भारत में सामंतवाद की स्थिति को स्वीकार करते है तथा उसे भूमि अनुदान, वाणिज्य व्यापार के पतन तथा बाह्य आक्रमण जैसी घटनाओ से जोड़कर देखते है किन्तु कुछ अन्य विद्वानो ने भारत में सामंतवाद की स्थिति को अस्वीकार कर दिया तथा पूर्व मध्यकाल की व्याख्या समान्वित राज्य की अवधारणा के सन्दर्भ में करने का प्रयास किया है अब अगर हम इन तथ्य का परीक्षण करते है तो हमे यह ज्ञात होता है कि पूर्व मध्यकाल मे भी भारत में राजनीतिक आर्थिक ढांचे में कुछ ऐसे परिवर्तन हुए जिन्हे हम सामंतवाद के विकास से जोड़ सकते है यद्यपि इसका स्वरूप यूरोपीय सामंतवाद से पृथक रहा है।

गुप्त काल भारतीय इतिहास स्वर्णयुग था क्या आप सहमत है।

न केवल भारतीय इतिहास वरन विश्व इतिहास मे भी कई कालो के लिए स्वर्णयुग शब्द का प्रयोग होता रहा है भारतीय इतिहास मे गुप्तकाल, चोलकाल एवं मुगलकाल के लिए स्वर्ण युग शब्द का प्रयोग

Scanned by CamScanner

हुआ है विश्व इतिहास में पेरीक्लीज का काल तथा इंग्लैण्ड में एलीजाबेथ का काल। किन्तु वर्तमान में इतिहास में मूल्यांकन की अवधारणा बदल चुकी है अब किसी भी काल की सफलता अभिजात एवं कुलीनो की संवृद्धि के आधार पर नही निर्धारित की जाती वरन जनसामान्य की स्थिति के आधार पर आंकी जाती है यही वजह है कि गुप्त काल के मूल्यांकन में स्वर्णयुग जैसी अवधारणा पर फिर से विचार करने की जरूरत है।

Devlopment of Ideas –

① आभिजात्य और कुलीनो के आधार पर यह काल चतुर्दिक सफलता का काल प्रतीत होता है। साम्राज्य निर्माण, फाहियान

② किन्तु जनसामान्य की दशा अच्छी नही थी –

ⓐ आर्थिक क्षेत्र में अवनति

ⓑ समाज में वर्णव्यवस्था की जटिलता, महिलाओ की सामाजिक दशा में गिरावट तथा अछूतो की दुर्दशा

③ कला और साहित्य भी कुलीन और अभिजात्यो की संवृद्धि को बताते है जनसामान्य की स्थिति पर प्रकाश नही डालते।

निष्कर्ष – Restatment of Idea or Restament of Thesis

इस प्रकार हम देखते है कला और साहित्य जनसामान्य पर प्रकाश नही डालते और फिर सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में तीव्र विभाजन विद्यमान था जनसामान्य की स्थिति अच्छी नही थी इसलिए हम गुप्त काल को स्वर्णयुग नही कह सकते।

Scanned by CamScanner

प्राचीन भारत का इतिहास

1. अध्ययन के स्रोत (i) पुरातात्विक (a) अन्वेषण और उत्खनन

Ans. पुरातत्व में अन्वेषण और उत्खनन क्या है। उत्खनन की कितनी प्रकार की विधियाँ प्रचलित है (300 शब्द)

(b) पुरालेख, मुद्रा एवं स्मारक

Ans - आभिलेख और मुद्राओं के अध्ययन के बिना प्राचीन भारत के इतिहास का पुनर्निर्माण अत्यधिक कठिन है (600 शब्द)

(ii) रोमन => साहित्यिक साक्ष्य

(a) प्राथमिक और द्वितीय स्रोत

Ans - प्राथमिक और द्वितीयक स्रोत से आप क्या समझते है प्राचीन काल के ~~अध्ययन में प्राथमिक स्रोत से सम्बन्धित विशाल साहित्य पर प्रकाश~~ डालिए (600 शब्द).

(b) प्राचीन काल के इतिहास के अध्ययन मे क्षेत्रीय साहित्य का योगदान.

(c) प्राचीन काल के इतिहास के अध्ययन मे धार्मिक और धर्मेत्तर साहित्य का योगदान.

(d) प्राचीन काल के इतिहास के अध्ययन मे विदेशी वर्णन की भूमिका (ग्रीक रोमन. चीनी. अरबी)

② (i) पुरा पाषाण काल और मध्य पाषाण काल => शिकार और खाद्यसंग्रह

(ii) आरम्भिक कृषक एवं पशुपालक => नवपाषाणकाल और ताम्रपाषाणकाल

③ हड़प्पा सभ्यता => उद्‌भव.काल. विस्तार. विशेषताएं, अर्थव्यवस्था. उत्तरजीविता और महत्व. पतन

④ मेगालीथिक संस्कृतियाँ => (महत्व) हड़प्पा सभ्यता से बाहर की कृषक संस्कृतियां.

⑤ वैदिक सभ्यता => (1500 ई० पू० - 500 ई० पू०) (a) वैदिक आर्यो का भौगोलिक प्रसार

(b) ऋगवैदिक से उत्तरवैदिक काल तक राजनीतिक.आर्थिक और सामाजिक रूपान्तरण

(c) वैदिक काल में धर्म और दर्शन का विकास

(D) वैदिक सभ्यता का महत्व

(E). वर्ण व्यवस्था एवं राजतन्त्र का क्रमिक विकास

(6) महाजनपद काल 600 ई० पू० - 400 ई० पू० ⇒ लिखित साहित्य यहीं से शुरू हुआ
(a) नन्दो के काल तक मगध साम्राज्य का प्रसार तथा उसकी सफलता के कारण
(b) गणतन्त्र एवं उनके पतन के कारण
(c) बुद्धकालीन अर्थव्यवस्था ⇒ कृषि का विस्तार, शिल्प एवं वाणिज्य व्यापार, मुद्रा अर्थव्यवस्था, नगरीकरण
(d)
(E) बुद्धकालीन समाज में होने वाले परिवर्तन
जैन धर्म और बौद्ध धर्म का प्रसार

(7) मौर्य काल ⇒ (400 ई० पू० - 200 ई० पू०) ⇒
(a) कौटिल्य का अर्थशास्त्र, मेगस्थनीज की इण्डिका तथा अशोक के अभिलेख (अध्ययन स्रोत के रूप में महत्व)
(b) मौर्य साम्राज्य का प्रसार
(c) मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था
(d) अशोक की धम्म नीति तथा अशोक की विदेश नीति
(E) मौर्य कला, स्थापत्य कला और मूर्ति कला
(F) मौर्य साम्राज्य का पतन

(8) मौर्योत्तर काल ⇒ (200 ई० पू० 300 ई०)
(I) उत्तर भारत में —
(a) इण्डो ग्रीक शक और कुषाण राजवंश, शुंग और कण्व वंश
(b) कृषि अर्थव्यवस्था, वाणिज्य एवं व्यापार, मुद्रा अर्थव्यवस्था तथा नगरीकरण
(c) समाज एवं धर्म तथा महायान पन्थ का विकास
(D) मौर्योत्तर काल स्थापत्य कला और मूर्ति कला
(E)
(II) दक्षिण भारत ⇒
(a) सातवाहन, खारवेल तथा संगम राजवंश
(b) भूमि अनुदान तथा कृषि अर्थव्यवस्था का प्रसार
(c) शिल्प, वाणिज्य व्यापार, मुद्रा अर्थव्यवस्था एवं नगरीकरण
(D) कला - स्थापत्य कला और मूर्ति कला
(E) संगम समाज एवं संस्कृति

Scanned by CamScanner

प्रयत्न करता है फिर भी इतिहास ग्रन्थ के रूप में उसकी कृति अनुपम है। वह राज दरबार की घटनाओं के अंकन तक ही सीमित नहीं है वरन वह समकाली न समाज पर भी प्रकाश डालता है आगे जोनराज एवं प्रजाभट्ट शुक जैसे लेखकों ने राजतरंगिणी लिखकर कल्हण की परम्परा को आगे बढ़ाने का प्रयास किया किन्तु उनके लेखन में वह विश्वसनीयता नहीं आ पायी जो कल्हण के लेखन में है।

Ans ⇒ भारत के सामाजिक इतिहास को पुनर्निर्माण करने में यूनानी रोमनो और चीनियो के वृतांत किस प्रकार सहायक है? उनके द्वारा दी गयी सूचना की अन्य समकालीन स्रोतो के द्वारा किस सीमा तक परिपुष्ट होती है।

Ans ⇒ विदेशी विवरण के बिना प्राचीन भारत के इतिहास का अध्ययन अत्यधिक कठिन है। इस कथन का परीक्षण कीजिए।

चौधरी PHOTOSTAT
Jia Sarai New Delhi-18
Mob. 9818909565

Ans ⇒ प्राचीन काल के इतिहास के अध्ययन में जहाँ साहित्य मौन है वहा पुरातत्व बोलता है। इस कथन का परीक्षण कीजिए। (300 W)

(पुरापाषाण काल + आद्यऐतिहासिक + हड़प्पा सभ्यता)

Scanned by CamScanner

मध्यकालीन इतिहास ⇒

सल्तनत काल ⇒

लघु निबंध ⇒

(1) रजिया सुल्तान, क्या एक विफल शासक ठहरती है।
(2) इल्तुतमिश ने तुर्क-ए-चहलगानी के माध्यम से अपने विनाश का बीज बो दिया।
(3) बलबन के राजत्व की अवधारणा तथा उसका क्रियान्वयन
(4) खिलजी क्रान्ति शब्द की प्रयोज्यनीयता
(5) अलाउद्दीन खिलजी की राजत्व की अवधारणा उसकी साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा से प्रेरित थी।
(6) ~~अलाउद्दीन खिलजी की बाजार नियंत्रण व्यवस्था~~ उसकी सैनिक महत्वाकांक्षा का परिणाम थी।
(7) अलाउद्दीन खिलजी के अन्तर्गत ग्रामीण क्रान्ति की अवधारणा का औचित्य।
(8) अलाउद्दीन खिलजी एक अनोखा साम्राज्यवादी था।
(9) क्या मुहम्मद बिन तुगलक एक पागल सुल्तान था।
(10) FST के लोककल्याणकारी कार्य
(11) दिल्ली सल्तनत के सुदृढ़ीकरण में FST की नीतियों की भूमिका
(12) इतिहासकार के रूप में बरनी और आमीर खुसरो का तुलनात्मक महत्व
(13) विदेशी सम्पर्क एवं इब्नबतूता का वर्णन
(14) दिल्ली सल्तनत का पतन
(15) सल्तनत कालीन स्थापत्य
(16) सल्तनत के अधीन समन्वित संस्कृति का विकास
(17) सल्तनत के अधीन व्यापार एवं वाणिज्य
(18) सल्तनत काल में नगरीय क्रान्ति शब्द का औचित्य
(19) सल्तनत के अधीन निर्गुण भक्ति का विकास
(20) सल्तनत काल में चित्रकला का विकास

Scanned by CamScanner

(21) सल्तनत काल में चित्रकला का विकास
(22) कश्मीर जैन-उल आबदीन
(23) बहमनी राज्य
(24) विजयनगर के अन्तर्गत नायंकार पद्धति
(25) विजयनगर स्थापत्य
(26) सूफी मत का योगदान
(27) लोदी वंश
(28) पुर्तगाली औपनिवेशिक प्रतिष्ठान
(29) शेरशाह के अन्तर्गत भूराजस्व सुधार

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न ⇒

(1) गौरी के आक्रमण तथा गोरी की सफलता के पीछे कारण
(2) गोरी के आक्रमण का आर्थिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिणाम
(3) इल्तुतमिश की उपलब्धियो का मूल्यांकन
(4) बलबन की उपलब्धियो का मूल्यांकन
(5) अलाउद्दीन खिलजी- साम्राज्यवादी प्रसार, प्रशासनिक सुधार; आर्थिक सुधार, अकबर से तुलना।
(6) MBT- साम्राज्यवादी प्रसार; प्रशासनिक उपयोग एवं सुधार- MBT के विरुद्ध विद्रोह, साम्राज्य के विघटन में MBT की भूमिका।
(7) FST - राजत्व की नवीन अवधारणा तथा लोककल्याणकारी राज्य, आर्थिक विनीय सुधार, सांस्कृतिक योगदान, सल्तनत के विघटन में FST की भूमिका का मूल्यांकन।
(8) शेरशाह - सूर साम्राज्य - प्रशासनिक सुधार, आर्थिक सुधार अकबर के पूर्वगामी के रूप में शेरशाह का मूल्यांकन।

Scanned by CamScanner

(9) सल्तनत कालीन प्रशासन – केन्द्रीय प्रशासन, इक्ता प्रशासन स्थानीय प्रशासन तथा भूराजस्व प्रशासन

(10) सल्तनत कालीन अर्थव्यवस्था – कृषि उत्पादन, कृषितर उत्पादन का उद्भव, व्यापार एवं वाणिज्य तथा नगरीय अर्थ व्यवस्था।

(11) भक्ति आन्दोलन का विकास तथा योगदान

(12) सूफी आन्दोलन का विकास तथा योगदान

(13) विजयनगर, प्रशासन, संस्कृति, कला एवं साहित्य

Ans (1) आरम्भिक तुर्की सुल्तानों की चुनौतियों तथा उपलब्धियों का आकलन कीजिए।

Ans (2) दिल्ली सल्तनत की स्थापना के आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव को दर्शाइये

Ans (3) दिल्ली सल्तनत के महत्व का आकलन कीजिए।

Ans (4) भारत के इतिहास में खिलजी शासन के योगदान पर टिप्पणी कीजिए।

Ans (5) MBT तथा PST दोनों के व्यक्तित्वों का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए यह निर्धारित कीजिए कि आप दोनों में किसे योग्य मानते हैं।

(गोरी की सफलता के कारण - राजपूतों के पराजय के कारण - 7 Points)

Scanned by CamScanner

आधुनिक भारत

मार्क्स उसके बाद दादाभाई नैरोजी

आधुनिक भारत के अध्ययन में प्रचलित विभिन्न दृष्टिकोण ⇒

साम्राज्यवादी दृष्टिकोण ⇒

इस दृष्टिकोण के विकास में ब्रिटिश अधिकारी वर्ग की अहम भूमिका रही डफरिन, कर्जन तथा मिण्टो की घोषणाओं में फि वेलेंटाइन शिरोल जैसे ब्रिटिश अधिकारियों के विवरण में इस दृष्टिकोण को खोजा जा सकता है आगे - ए. गलहर तथ पर्सीवर स्पीयर जैसे विद्वानों ने इस दृष्टिकोण को प्रोत्साहन दिया। यह दृष्टिकोण यह स्थापित करने का प्रयत्न करता है कि भारत में ब्रिटिश विजय सुनियोजित नहीं वरन आकस्मिक था दूसरे शब्दों में ब्रिटिश को भारत जीतने की कोई योजना नहीं थी उसी प्रकार यह राजनीतिक आर्थिक तथा सांस्कृतिक ढाँचे के रूप में भारत में उपनिवेशवाद को अस्वीकार करता है इसका मानना है कि भारत में उपनिवेशवाद नहीं था अगर था तो केवल विदेशी शासन फिर भारत में अग उपनिवेशवाद नहीं था तो राष्ट्रवाद भी नहीं था अतः यह भारत में राष्ट्रवादी आन्दोलन को महज एक छद्म संघर्ष का नाम देता है भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की व्याख्या संरक्षक संरक्षित सम्बन्धों के सन्दर्भ में भी करने का प्रयास किया गया तथा राष्ट्रवाद को नौकरी पाने तथा नये आर्थिक अवसर को प्राप्त करने जैसे निजी स्वार्थ की अवधारणा से जोड़ा गया।

PHOTOSTAT
Jia Sarai New Delhi-16
Mob.. 9818909565

नव कैम्ब्रिज इतिहास लेखन ⇒

1973 के बाद ~~एक नया~~ विद्वानों का एक नया वर्ग आया इसने दृष्टिपरिवर्तन की सूचना दी इनका यह मानना था कि प्रान्त और वर्ग की जगह क्षेत्र और गुट का अध्ययन

Scanned by CamScanner

किया जाना चाहिए इसी के साथ माइक्रो स्टडी की पद्धति आरम्भ हुई क्रिस्टोफर बायली, जानसन, गार्डन, ज्यूडिथ ब्राऊन जैसे विद्वानो ने अलग-2 क्षेत्र का अध्ययन किया किन्तु मौलिक बातो मे इन विद्वानो का दृष्टिकोण पूर्व साम्राज्यवादी लेखको से अलग नही था इनके विश्लेषण का तरीका आधुनिक परिष्कृत है किन्तु इनका उद्देश्य भी भारत मे ब्रिटिश शासन का औचित्य सिद्ध करना है क्रिस्टोफर बायली को छोड़कर दूसरा कोई भी विद्वान भारत में राष्ट्रवाद की स्थिति को स्वीकार नही करता।

राष्ट्रवादी दृष्टिकोण ⇒

राष्ट्रवादी दृष्टिकोण भारत मे उपनिवेशवाद की स्थिति को स्वीकार करता है तथा यह स्थापित करने का प्रयत्न करता है कि ब्रिटिश औपनिवेशिक हित और भारतीयो के हितो के बीच मौलिक विरोधाभाष था राष्ट्रवाद का विकास राष्ट्रीयता की अवधारणा के प्रसार के कारण हुआ राष्ट्रवादी विद्वानो मे आम्बिकाचरण मजूमदार, गिरिजा प्रसाद मुकर्जी, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी आदि थे फिर वर्तमान मे अमलेश त्रिपाठी इसी दृष्टिकोण से सम्बद्ध है। किन्तु राष्ट्रवादी दृष्टिकोण की एक प्रमुख सीमा यह है कि वह जातीय एवं वर्ग के रूप मे भारतीय समाज के आन्तरिक विरोधाभाष को अस्वीकार करता है तथा यह मानता है ब्रिटिश के विरुद्ध सभी भारतीयो के हित एक थे।

राष्ट्रीय आंदोलन के कारण

मार्क्सवादी दृष्टिकोण ⇒

मार्क्सवादी दृष्टिकोण ने उपर्युक्त दृष्टिकोण मे सुधार लाया इसके द्वारा यह स्थापित करने का प्रयत्न किया गया कि

विरोधाभाष एक नही अपितु विरोधाभाष दो थे प्रथम विरोधाभाष या प्राथमिक विरोधाभाष तो द्वितीय विरोधाभाष या द्वितीयक विरोधाभाष, प्राथमिक विरोधाभाष ब्रिटिश औपनिवेशिक हित तथा भारतीय जनता के हित के बीच था तो द्वितीयक विरोधाभाष भारतीय समाज के अन्दर ही दो वर्गों के बीच हितो की टकराहट को दर्शाता है ये वर्ग थे जमींदार और किसान पूंजीपति वर्ग और श्रमिक वर्ग आदि

आरम्भिक मार्क्सवादी विद्वानो में M.N. Rai, रजनीपाम दत्त तथा ए आर देसाई प्रमुख थे किन्तु इनके लेखन में हम प्राथमिक विरोधाभाष तथा द्वितीय विरोधाभाष के बीच उचित संतुलन नही देखते आगे विपिन चन्द्र, आदित्य मुखर्जी मृदुला मुखर्जी आदि के लेखन मे प्राथमिक विरोधाभाष और द्वितीयक विरोधाभाष के बीच अधिक बेहतर संतुलन देखने को मिलता है। —

सबाल्टर्न दृष्टिकोण (उपाश्रयवादी दृष्टिकोण) ⇒

इसका विकास मार्क्सवादी दृष्टिकोण से ही हुआ है सबाल्टर्न शब्द के जन्मदाता एक इटैलियन मार्क्सवादी लेखक एंतोनियो ग्राम्सी है इस दृष्टिकोण का विकास 1980 के दशक में हुआ रंजीत गुहा इस दृष्टिकोण के आरम्भिक संस्थापक है फिर पार्थ चटर्जी ने भी इस दृष्टिकोण का विकास किया सुमित सरकार भी इस दृष्टिकोण के प्रभाव में लिखते रहे है सबाल्टर्न इतिहास लेखन ने पूर्व काल के समस्त लेखन को अभिजात्य लेखन कहकर अस्वीकार कर दिया इनका मानना था कि चाहे साम्राज्यवादी स्कूल हो या राष्ट्रवादी अथवा मार्क्सवादी उपर्युक्त सभी एक समान दोष के शिकार है और वह कि सबो मे नेतृत्व की भूमिका को बढ़ाचढ़ा

कर आका है जिनके विचार में नेता जनसमुदाय को नियंत्रित नही करता वरन जन समुदाय का दबाव नेतृत्व को दिशा देता है इन्होने भारतीय राजनीति को दो समूहो में बाटा आभिजात्य समूह तथा दलित समूह फिर इन्होने दलित वर्ग की चेतना के अध्ययन पर बल दिया अगर एक दृष्टि से देखा जाय तो कई बातो में सबाल्टर्न इतिहास लेखन कैम्ब्रिज इतिहास लेखन के निकट आ जाता है कैम्ब्रिज इतिहास लेखन ने भारत में राष्ट्रवाद को अस्वीकार किया उसी प्रकार सबाल्टर्न भी राष्ट्रवाद को अस्वीकार करते है तथा उसे एक आभिजात्य परिकल्पना करार देते है कैम्ब्रिज इतिहास लेखन की ही तरह सबाल्टर्न भी माइक्रो स्टडी पर बल देते है फिर भी दोनो मे एक महत्वपूर्ण अन्तर है कि कैम्ब्रिज लेखक आभिजात्य वर्ग मे केवल भारतीय आभिजात्य वर्ग की बात करते है जबकि सबाल्टर्न लेखक आभिजात्य वर्ग मे भारतीय एवं ब्रिटिश दोनो को शामिल करते है तथा दलित वर्ग के साथ उनके हितो का विरोधाभाष दिखाते है।

इतिहास के तैयारी का अर्थ है राजनीतिक आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में निरन्तरता एवं ~~तत्वों~~ परिवर्तन के तत्वों को रेखांकित करना।

राजनीतिक ⇒

(1) राजनीतिक विस्तार ⇒

(2) राजत्व की अवधारणा

(3) प्रशासन

[redacted]

आर्थिक ⇒

कृषि, शिल्प, उद्योग, वाणिज्य व्यापार

PHOTOSTAT
Jia Sarai New Delhi-16
Mob: 9818909565

समाज ⇒

संस्कृति ⇒

(1) धर्म

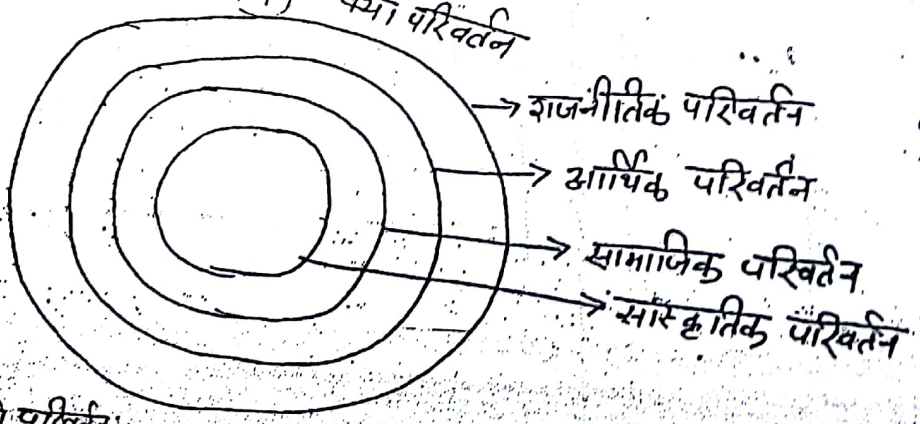

(2) दर्शन

(3) कला

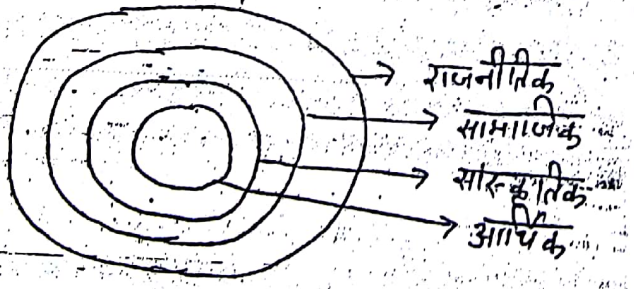

(1) क्या परिवर्तन

(2) क्यों परिवर्तन

द्वितीय चरण =>

द्वितीय चरण के अध्ययन में इतिहास लेखन का ज्ञान आवश्यक होता है इतिहास लेखन के ज्ञान की जरूरत न केवल प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए वरन प्रश्न समझने के लिए भी होता है।

तृतीय => एक तरह से अगर देखा जाय तो यह चरण सबसे महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इसी चरण में विषय वस्तु के ज्ञान को अंक में तब्दील किया जा सकता है। लेखन एक रचनात्मक प्रक्रिया है तथा इसके लिए एक निरन्तर अभ्यास की जरूरत होती है।

Ques => गुप्त काल में जनसामान्य के द्वारा स्वर्ण सिक्को का प्रयोग।।

Ans => स्वर्ण सिक्को के प्रयोग की दृष्टि से गुप्त काल विशिष्ट है क्योंकि प्राचीन काल के इतिहास में गुप्त काल में ही सर्वाधिक सख्या में सोने के सिक्के जारी किये गये किन्तु हमे यह ध्यान रखना चाहिए कि स्वर्ण सिक्को का प्रयोग अभिजात्य वर्ग तक ही सीमित रहा जनसामान्य तक यह नही पहुच पाया यही वजह है कि गुप्त काल के सन्दर्भ में स्वर्ण युग जैसी अवधारणा ने अपना अर्थ खो दिया है।

एक स्तरीय लेखन के निम्नलिखित पहलू होते हैं—

1. Introduction + Thesis — इसमे किसी प्रश्न पर अपने झुकाव

Scanned by CamScanner

को स्पष्ट किया जाता है

(2) development of ideas — इस भाग में अलग अलग पैराग्राफ में विभाजित कर विश्लेषण को आगे बढ़ाया जाता है प्रत्येक पैराग्राफ में एक मुख्य विचार होता है जो Thesis को सिद्ध करना चाहता है। पैराग्राफ में विभाजन प्रश्न के आकार के

(3) आधार पर होता है, अगर प्रश्न 600 शब्दों का हो तो कम से कम तीन पैराग्राफ अधिक से अधिक पाँच पैराग्राफ होता है किन्तु अगर प्रश्न 300 शब्दो का हो तो तो प्रश्न दो पैराग्राफ में लिखा जा सकता है।

Transition → विभिन्न पैराग्राफ के बीच ~~आप~~ आपस में जुड़ाव होता है। जिसे है Transition कहते है अर्थात पहले पैराग्राफ की अंतिम पंक्ति तथा दूसरे पैराग्राफ की पहली पंक्ति के बीच निरन्तरता विद्यमान होती है।

निष्कर्ष — ~~developm~~

(A) Restatment of Ideas

(B) Restatment of Thesis

Scanned by CamScanner

पाठ्यक्रम से बाहर ⇒

प्राचीन एवं मध्यकालीन यूरोप एवं एशिया

1. यूनान के नगर राज्य तथा सिकन्दर का साम्राज्य
2. पश्चिम एशिया में इस्लाम का उदभव तथा अरब साम्राज्य
3. रोमन साम्राज्य एवं बिजेंटियन साम्राज्य
4. पवित्र रोमन साम्राज्य
5. इसाई धर्म एवं सर्वव्यापी चर्च व्यवस्था
6. सामंतवाद का उदभव
7. भौगोलिक अन्वेषण
8. पुनर्जागरण
9. धर्म सुधार आन्दोलन
10. व्यवसायिक क्रान्ति एवं वाणिज्यवाद
11. राष्ट्रीय राजतंत्र का उदभव

5

पाठ्यक्रम ⇒

1. (i) प्रबोधन के विचार - काण्ट एवं रूसो
   (ii) यूरोप से बाहर प्रबोधन का प्रसार
2. समाजवाद एवं मार्क्सवाद, मार्क्स के पश्चात यूरोप में समाजवाद का प्रसार
3. अमेरिकी क्रान्ति तथा अमेरिकी संविधान
4. अमेरिकी गृह युद्ध
5. फ्रांस की क्रान्ति तथा उसका प्रभाव (1789 - 1815)
6. 19वीं सदी में राष्ट्रवाद का विकास
7. इटली तथा जर्मनी में राष्ट्रीय राज्य का उदभव
8. विभिन्न राष्ट्रीयताओ के उदभव के कारण साम्राज्यो का विघटन - ओटोमन साम्राज्य, हैप्सबर्ग साम्राज्य तथा रूसी साम्राज्य

Scanned by CamScanner